

अनंग वि. (तत्.) देहरहित, बिना अंग का, आकृतिहीन। **पुं.** (तत्.) 1. वह जिसके अंग न हो 2. कामदेव 3. मन 4. आकाश 5. निराकार।

अनंगक पुं. (तत्.) मन, चित्त, (जो शरीर के अंग के रूप में नहीं होते)।

अनंगक्रीड़ा स्त्री. (तत्.) 1. कामक्रीड़ा 2. मुक्तक का एक भेद जिसके प्रथम चरण में दीर्घ वर्ण और द्वितीय चरण में 32 लघुवर्ण होते हैं।

अनंगद वि. (तत्.) कामोत्पादक।

अनंगवती वि.स्त्री. (तत्.) कामिनी।

अनंगवर्णन पुं. (तत्.) साहि. रसदोष का एक भेद। रस के अनपकारक दृश्य आदि का वर्णन होने का दोष।

अनंगशत्रु पुं. (तत्.) कामदेव के शत्रु, शिव, महादेव।

अनंग शेखर पुं. (तत्.) साहि. दंडक नामक वर्णिक छंदों का एक प्रकार जिसके प्रत्येक चरण में लघु-गुरु वर्णों का मनमाना प्रयोग हो सकता है। इस छंद को "द्विनाराचिका" और "महानाराच" भी कहा जाता है।

अनंगारि पुं. (तत्.) दे. अनंगशत्रु।

अनंगी वि. (तत्.) 1. बिना देह का, अशरीर, अंगरहित, अंगविहीन 2. अपाहिज। **पुं.** (तत्.) 1. निराकार परमेश्वर 2. कामदेव।

अनंगीकरण पुं. (तत्.) 1. स्वीकार न करना, दायित्व को न मानना 2. अनंग बनाना, अंगरहित करना।

अनंगीकार पुं. (तत्.) 1. किसी प्रभाव या सत्ता को न मानना, अस्वीकरण, किसी आज्ञा, सत्ता या बात को मानने से इंकार 2. अंगीकरण या स्वांगीकरण न करने की स्थिति।

अनंगीकृत वि. (तत्.) जिसे स्वीकार न किया गया हो, अस्वीकार।

अनंगुलि वि. (तत्.) अंगुलिहीन, बिना अंगुलियों का, अंगुलियों से हीन या रहित।

अनंजन वि. (तत्.) 1. अंजन रहित, अंजनशून्य 2. निर्दोष **पुं.** (तत्.) 1. विवेक रहित 2. परमेश्वर (अप्रकट शरीरी कामदेव) 3. अनंभ, आकाश।

अनंत वि. (तत्.) 1. जिसका अंत न हो, जिसका पार न हो, असीम, अपार 2. बहुत अधिक, असंख्य, अनेक 3. अविनाशी 4. नित्य **पुं.** 1. विष्णु 2. शेषनाग 3. लक्ष्मण 4. बलराम 5. आकाश 6. अंभक 7. विष्णु का शंख 8. शिव, रुद्र 9. मोक्ष 10. वासुकि 11. बादल 12. श्रवण नक्षत्र 13. ब्रह्म।

अनंत समाकल वि. (तत्.) वाणि. वह समाकल, जिसका समाकलन अंतराल परिबद्ध न हो।

अनंतकाय पुं. (तत्.) जैनियों के अनुसार उन वनस्पतियों का समुदाय विशेष जिनके खाने का निषेध है। **वि.** (तत्.) बहुत बड़े शरीर वाला।

अनंतग वि. (तत्.) अनंत काल तक चलने वाला।

अनंतगुण वि. (तत्.) बहुत अधिक गुणों से युक्त।

अनंतचरित्र पुं. (तत्.) एक बोधिसत्त्व।

अनंतजित् पुं. (तत्.) 1. वासुदेव कृष्ण 2. चौदहवें जैन अरिहंत।

अनंतता स्त्री. (तत्.) 1. असीमत्व 2. सातत्य 3. अत्यधिकता।

अनंतदेव पुं. (तत्.) 1. शेषनाग 2. शेषशायी विष्णु।

अनंतर क्रि.वि. (तत्.) 1. बाद, उपरांत 2. निरंतर, लगातार 3. पीछे **वि.** (तत्.) अंतरहित, निकटस्थ **पुं.** (तत्.) समीपता, निकटता।

अनंतरणीय वि. (तत्.) जिसे अन्य को अंतरित या हस्तांतरित न किया जा सके।

अनंतरित वि. (तत्.) 1. जिसमें बाधा, रुकावट न आई हो 2. जिनके बीच में कोई अंतर, भेद या बाधा न हो। 3. जो निरंतर रहे, अखंड, अटूट।

अनंतरीय वि. (तत्.) (जन्म, उन्नति आदि में) जो क्रम में किसी के तत्काल बाद हो, एकदम अगला, क्रम में अगला।